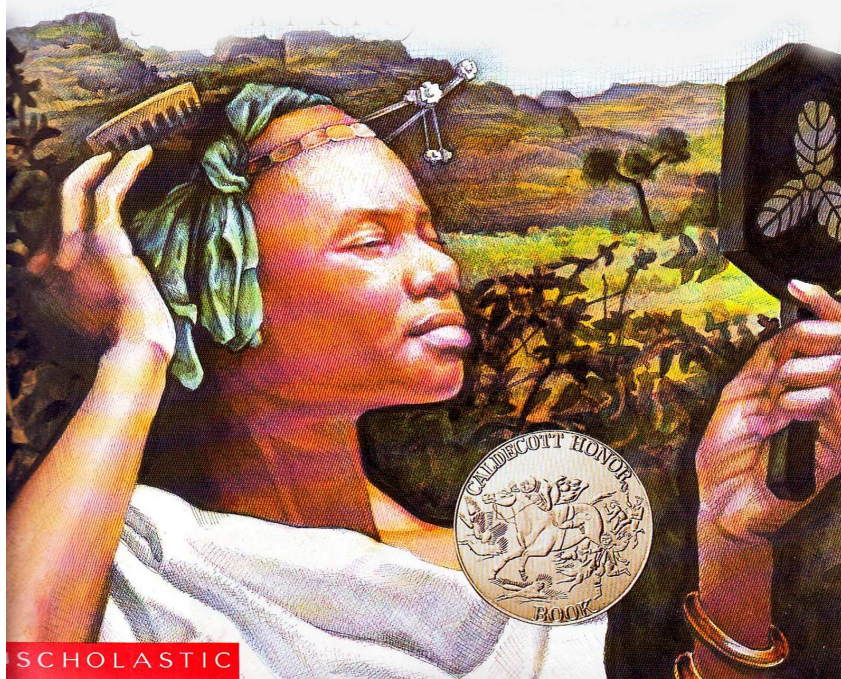


मूफ़ारो की सुन्दर बेटियां

एक अफ्रीकी कहानी

जॉन स्टेपटो



मूफ़ारो की सुन्दर बेटियां

एक अफ्रीकी कहानी

जॉन स्टेपटो

हिंदी: विदूषक

मूफ़ारो की सुन्दर बेटियां एक अफ्रीकी लोककथा है। उसे जी. एम. थेअल ने 1895 में अपनी पुस्तक *काफ़िर टैल्स* में संकलित किया था। पुस्तक के चित्र, जिंबाबवे में उत्खनन के दौरान पाए गए पुराने शहर के अवशेषों और उस इलाके के पौधों और प्राणियों से प्रेरित हैं।

मूफ़ारो का मतलब होता है “खुश इंसान”. *नीयाशा* का मतलब होता है “कृपा”. *मान्यारा* का मतलब होता है “शर्मिदा” और *न्योका* का मतलब होता है “सांप”. पुस्तक के बारे में शोध के दौरान मदद के लिए लेखक, जिंबाबवे मिशन के कई सदस्यों का शुक्रिया अदा करना चाहता है।

यह पुस्तक दक्षिण अफ्रीका के बच्चों को समर्पित है।

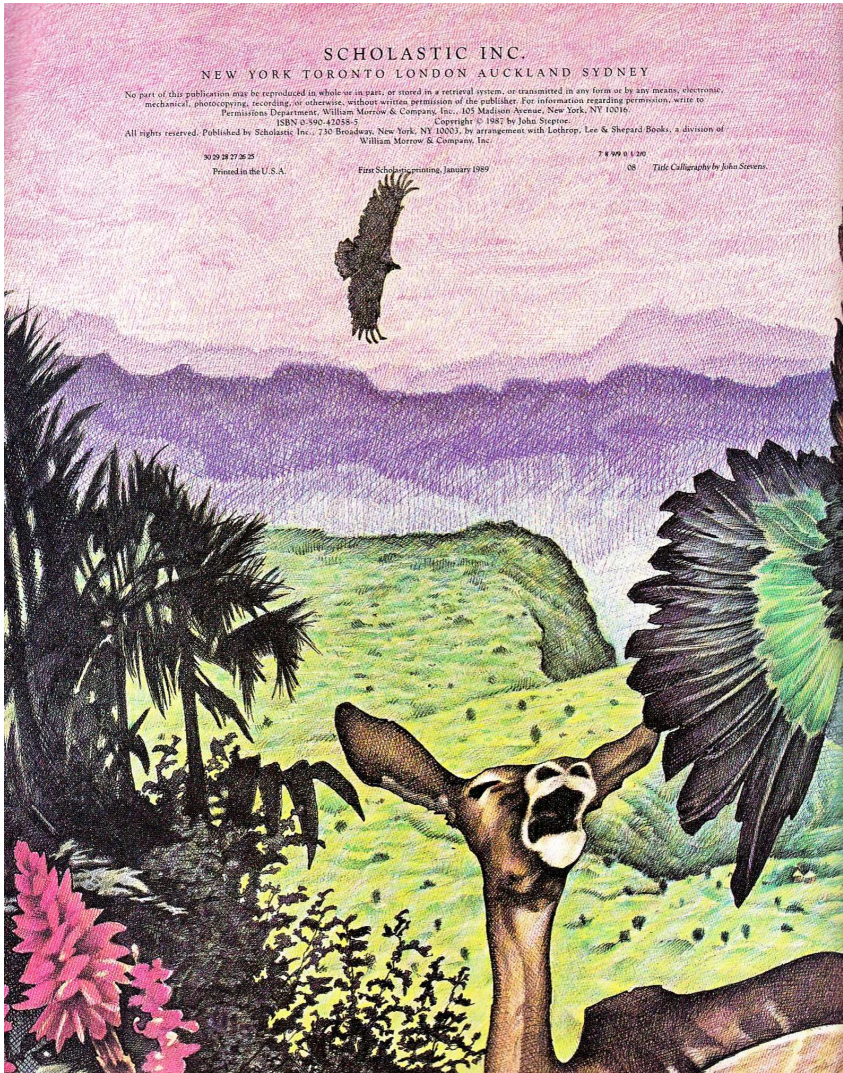
SCHOLASTIC INC.
NEW YORK TORONTO LONDON AUCKLAND SYDNEY

No part of this publication may be reproduced in whole or in part, or stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording, or otherwise, without written permission of the publisher. For information regarding permission, write to: Permissions Department, William Morrow & Company, Inc., 105 Madison Avenue, New York, NY 10016.
ISBN 0-590-42058-5
Copyright © 1987 by John Steptoe.
All rights reserved. Published by Scholastic, Inc., 730 Broadway, New York, NY 10003, by arrangement with Lothrop, Lee & Shepard Books, a division of William Morrow & Company, Inc.

30 29 28 27 26 25
Printed in the U.S.A.

First Scholastic printing, January 1989

7 6 5 4 3 2 1
08 Title Calligraphy by John Steptoe.



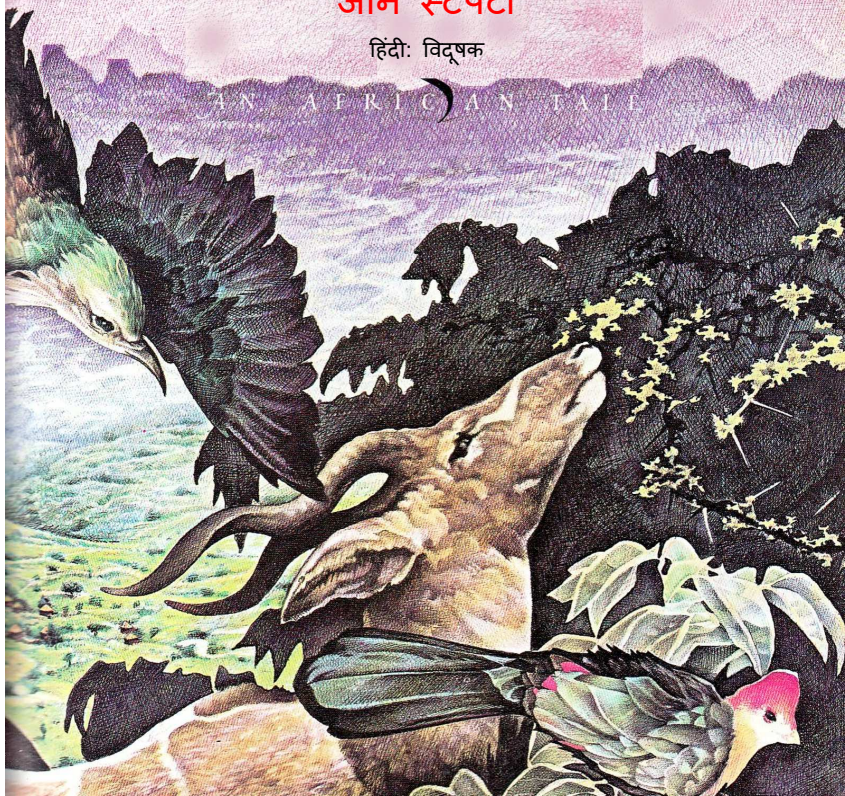
मूफ़ारो की सुन्दर बेटियां

एक अफ्रीकी कहानी

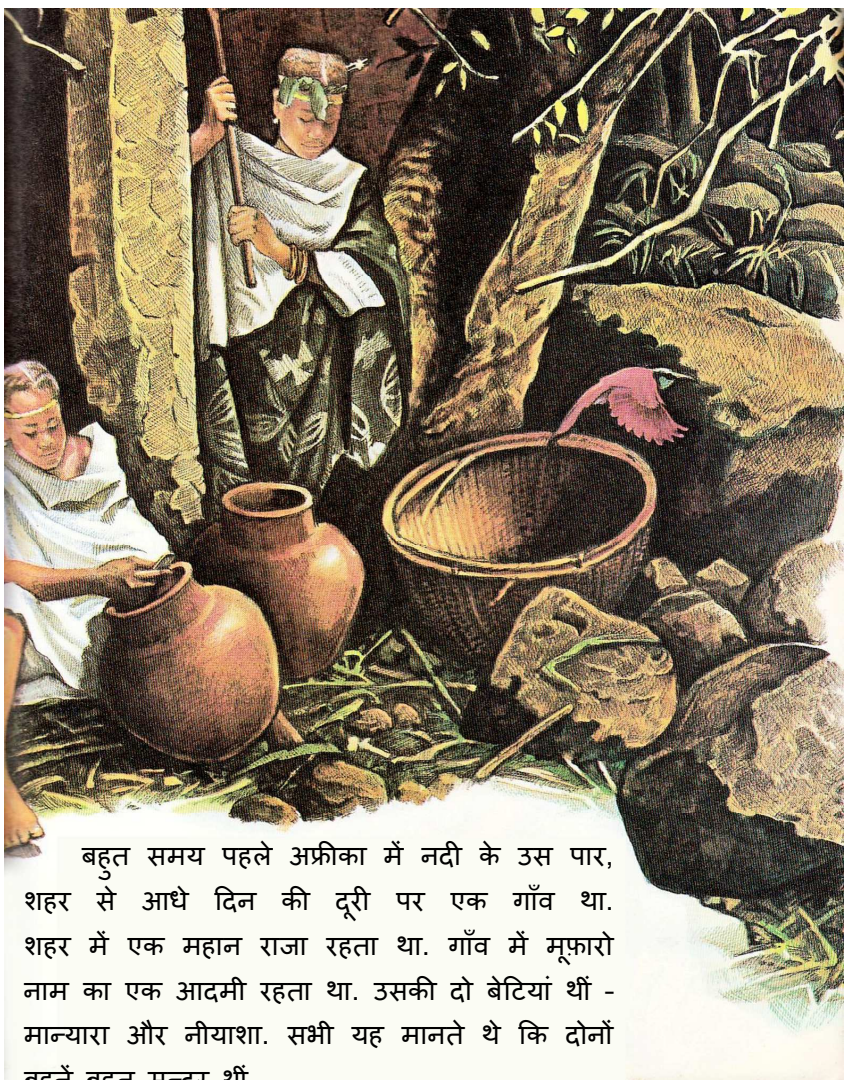
जॉन स्टेपटो

हिंदी: विदूषक

AN AFRICAN TALE



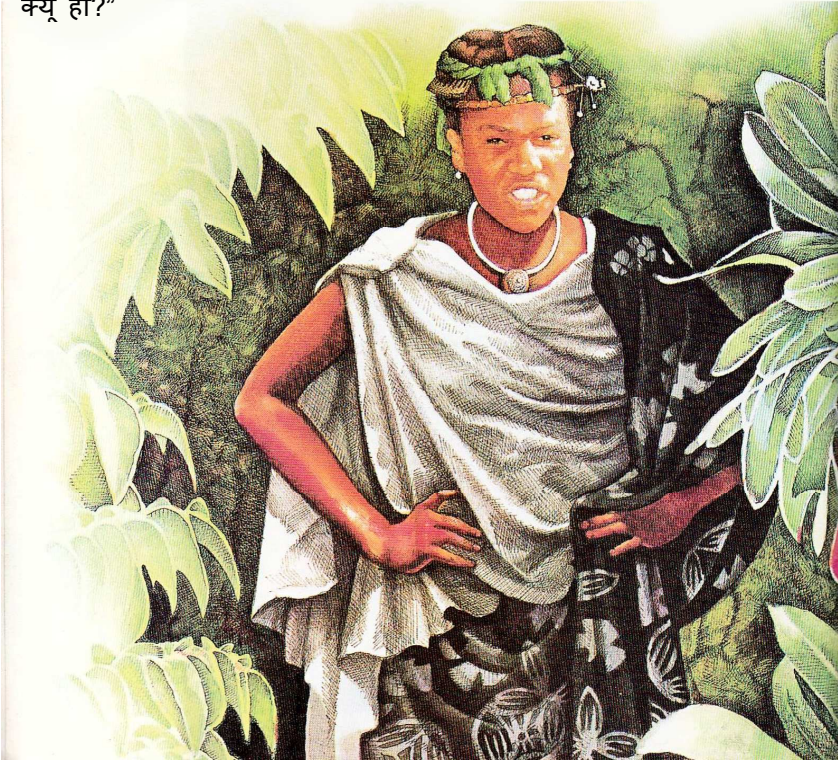




बहुत समय पहले अफ्रीका में नदी के उस पार, शहर से आधे दिन की दूरी पर एक गाँव था. शहर में एक महान राजा रहता था. गाँव में मूफारो नाम का एक आदमी रहता था. उसकी दो बेटियाँ थीं - मान्यारा और नीयाशा. सभी यह मानते थे कि दोनों बहनें बहुत सुन्दर थीं.

मान्यारा काफी गुस्सैल थी. पिता जब नहीं होते तो वो अपनी बहन को बहुत चिढ़ाती थी. लोगों ने उसे यह कहते भी सुना था, “नीयाशा, एक दिन मैं रानी बनूंगी और तू मेरी नौकरानी होगी.”

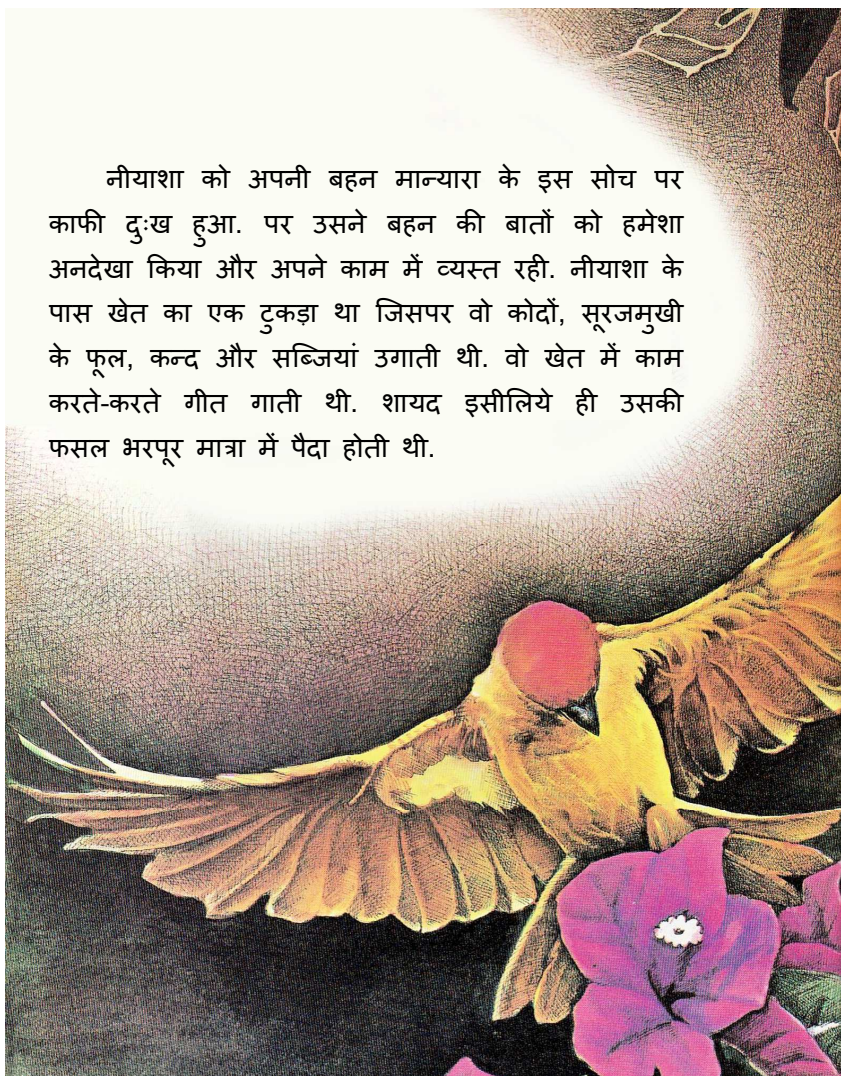
“अगर कभी ऐसा हुआ तो मुझे बहुत खुशी होगी,” नीयाशा ने जवाब दिया, “तब मैं तुम्हारी बहुत खिदमत करूंगी. पर आखिर तुम ऐसी बातें क्यों करती हो? तुम होशियार और सुन्दर हो. तुम इतनी दुखी क्यों हो?”

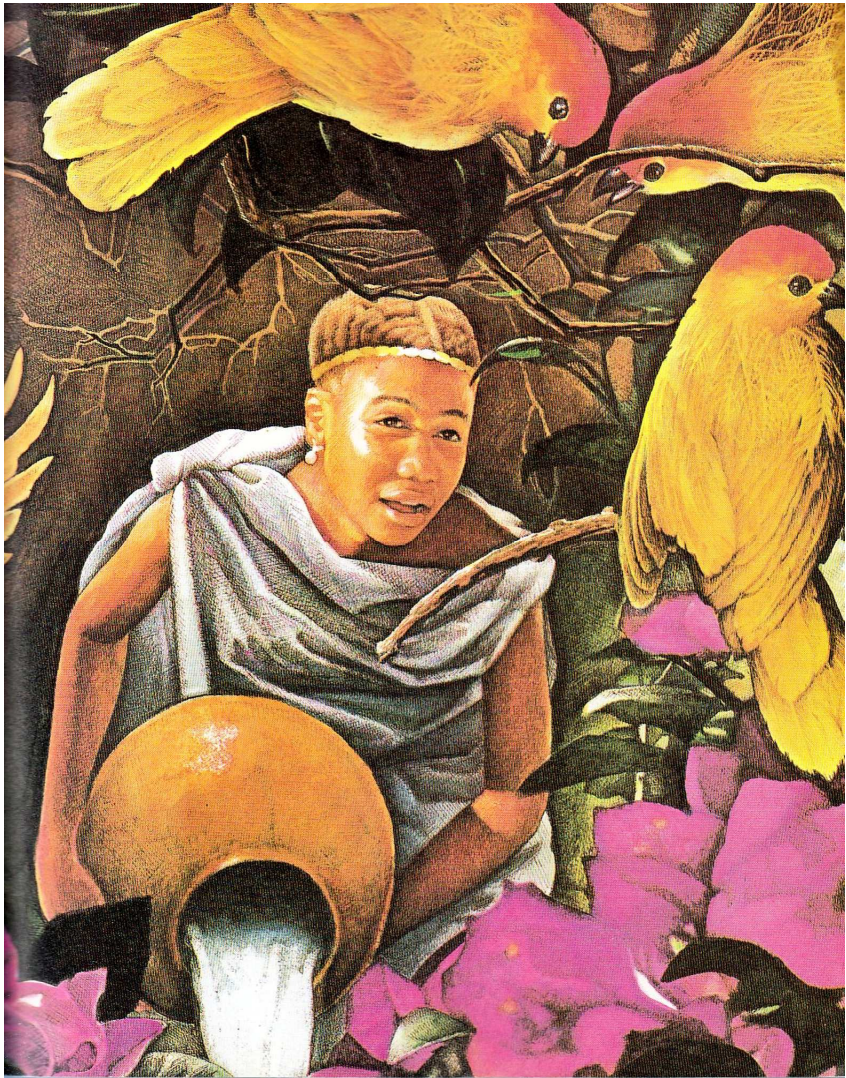


“क्यूँकि, सब लोग हमेशा तुम्हारी तारीफ करते हैं - कहते हैं कि तुम कितनी दयालू हो,” मान्यारा ने उत्तर दिया. “मैं पक्का जानती हूँ कि पिताजी तुम्हें सबसे ज्यादा प्यार करते हैं. पर जब मैं रानी बनूँगी, तब तुम्हारी बेवकूफी और कमजोरी सबको ज़ाहिर होगी.”



नीयाशा को अपनी बहन मान्यारा के इस सोच पर काफी दुःख हुआ. पर उसने बहन की बातों को हमेशा अनदेखा किया और अपने काम में व्यस्त रही. नीयाशा के पास खेत का एक टुकड़ा था जिसपर वो कोदों, सूरजमुखी के फूल, कन्द और सब्जियां उगाती थी. वो खेत में काम करते-करते गीत गाती थी. शायद इसीलिये ही उसकी फसल भरपूर मात्रा में पैदा होती थी.

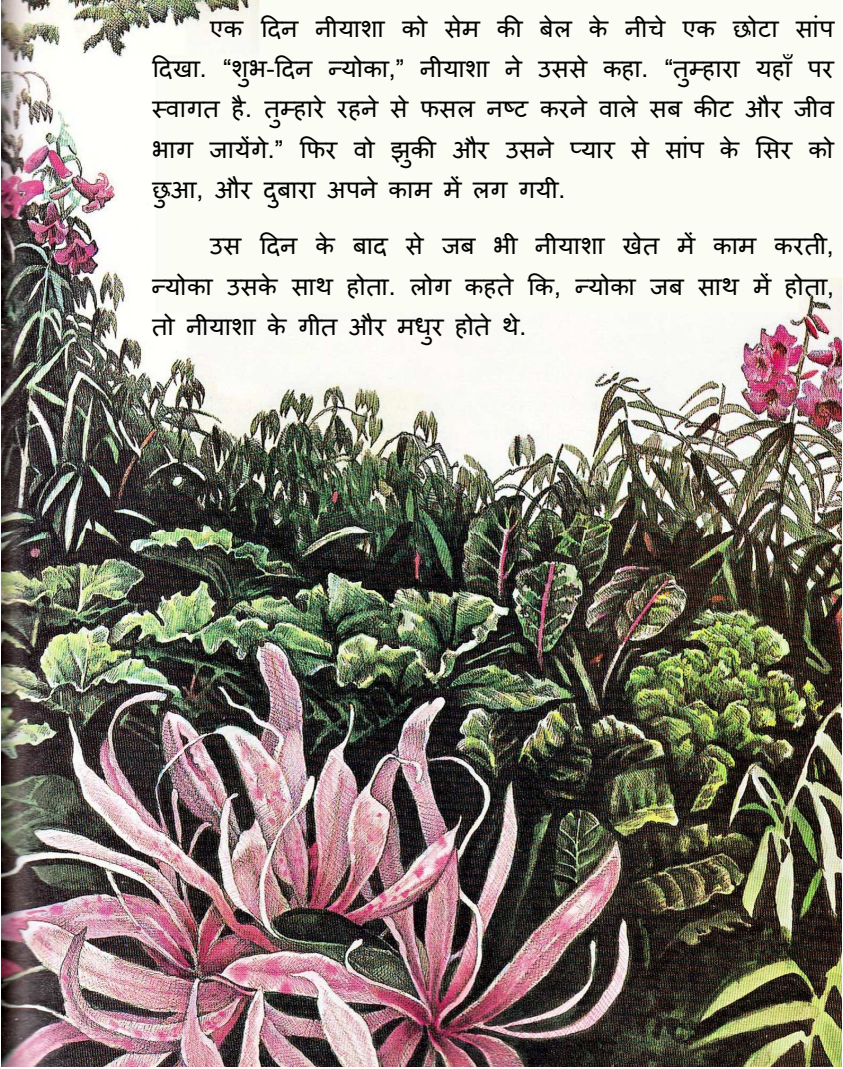






एक दिन नीयाशा को सेम की बेल के नीचे एक छोटा सांप दिखा. "शुभ-दिन न्योका," नीयाशा ने उससे कहा. "तुम्हारा यहाँ पर स्वागत है. तुम्हारे रहने से फसल नष्ट करने वाले सब कीट और जीव भाग जायेंगे." फिर वो झुकी और उसने प्यार से सांप के सिर को छुआ, और दुबारा अपने काम में लग गयी.

उस दिन के बाद से जब भी नीयाशा खेत में काम करती, न्योका उसके साथ होता. लोग कहते कि, न्योका जब साथ में होता, तो नीयाशा के गीत और मधुर होते थे.



मान्यारा, नीयाशा के साथ कैसा सलूक करती है, उसके बारे में मूफ़ारो को कुछ पता नहीं था. नीयाशा ने पिता से, बहन की कभी शिकायत नहीं की थी. और मूफ़ारो के सामने, मान्यारा जानबूझ कर अपनी बहन के साथ अच्छा व्यवहार करती थी.


एक दिन सुबह-सुबह शहर से एक राजदूत आया. महान राजा को एक पत्नी की ज़रूरत थी. “देश की सबसे सुन्दर, शालीन और योग्य लड़कियों को, राजा के सामने हाज़िर होना था. उनमें से सर्वश्रेष्ठ को राजा, अपनी पत्नी चुनेगा!” राजदूत ने सन्देश दिया.

मूफ़ारो ने मान्यारा और नीयाशा, दोनों बेटियों को बुलाया. “अगर तुम दोनों में से किसी एक को राजा चुने, तो यह मेरे लिए कितने सम्मान की बात होगी,” उसने कहा. “अब तुम दोनों शहर जाने की तैयारी करो. मैं बारात के लिए तुम्हारे सभी मित्रों को बुलाऊंगा. कल सुबह तड़के ही हम शहर की ओर रवाना होंगे.”

“पर पिताजी,” मान्यारा ने प्यार से कहा, “चाहें राजा ही क्यों न हमें चुने, पर आपको छोड़ कर जाना हम दोनों के लिए कष्टदायी होगा. आपसे जुदा होने के सदमे से ही नीयाशा मर जायेगी, इतना मैं जानती हूँ. मुझमें, उससे ज्यादा हिम्मत है. आप मुझे शहर भेजें और नीयाशा को खुशी-खुशी अपने पास रखें.”

यह सुनकर मूफ़ारो बहुत खुश हुआ. “राजा ने सबसे सुन्दर और योग्य लड़की की फरमाईश की है. पर देखो मान्यारा, मैं तुम्हे अकेले नहीं भेज सकता हूँ. केवल राजा ही दो योग्य लड़कियों में से किसी एक को चुन सकता है. इसलिए तुम दोनों को ही शहर जाना होगा!”






उस रात जब सब लोग सो रहे थे तब मान्यारा चुपके से उठकर गाँव से चल दी. उससे पहले रात को अकेले वो कभी भी जंगल में नहीं गयी थी. वो डरी हुई थी, पर राजा के सामने सबसे पहले हाज़िर होने का लालच भी उसे सता रहा था. इसलिए वो तेज़ी से चली. जल्दबाजी में वो रास्ते में आये एक लड़के से टकरा गयी.

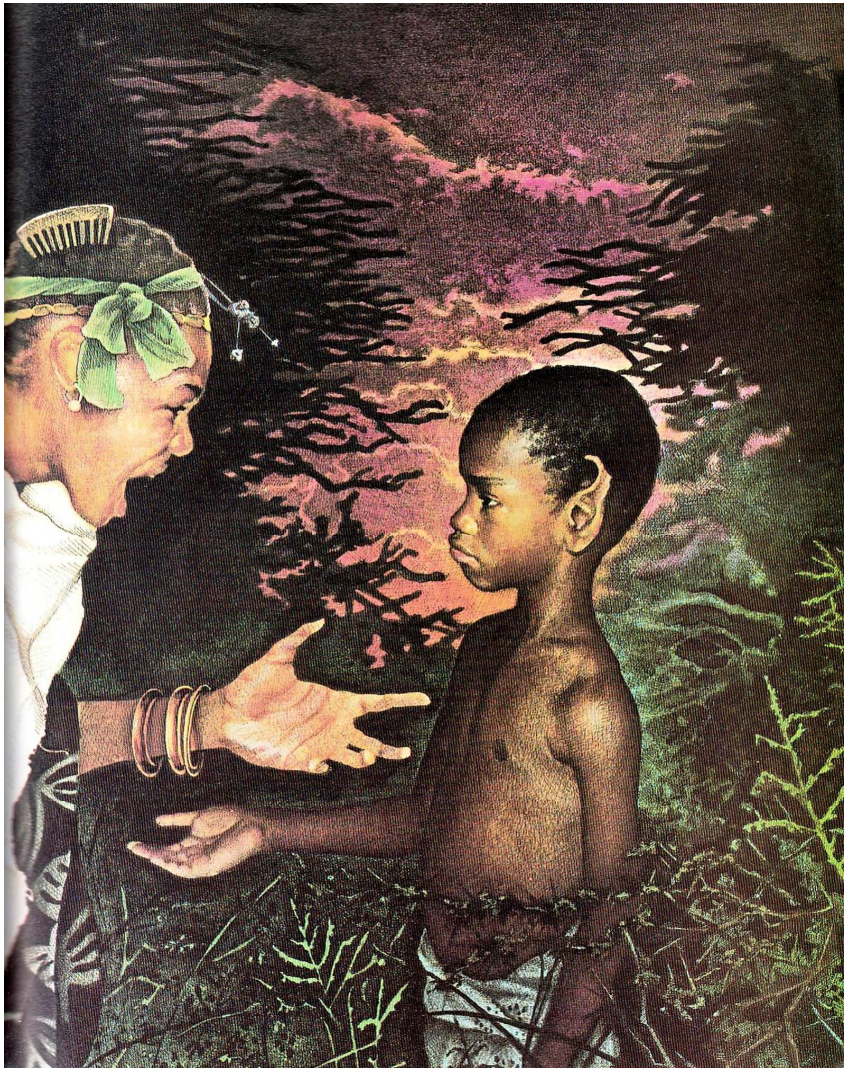
“कृपाकर मुझे कुछ खाने को दो,” लड़के ने कहा. “मुझे भूख लगी है. क्या तुम मुझे कुछ खाने को दोगी?”

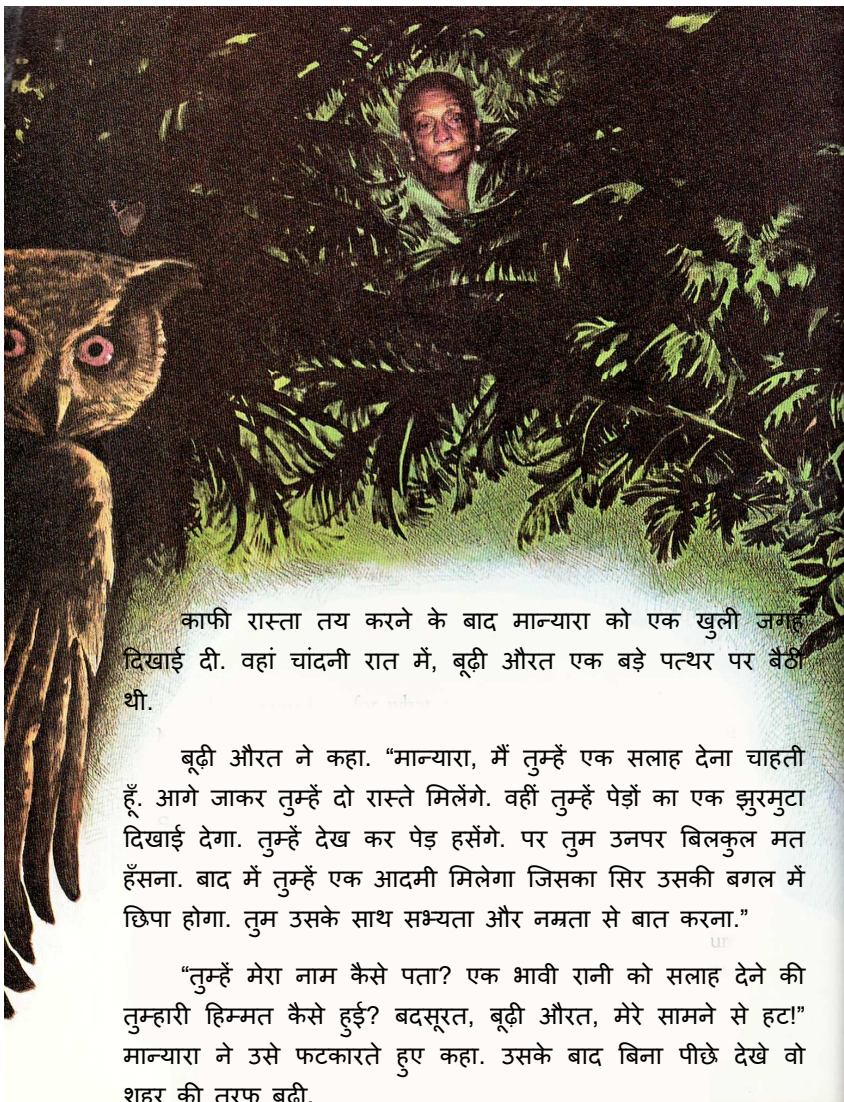
“पर मैं सिर्फ अपने लिए खाना लाई हूँ,” मान्यारा ने जवाब दिया.

“कृपा मुझे कुछ खाने को दो,” लड़के ने कहा. “मुझे बहुत भूख लगी है.”

“हट, मेरे सामने से! पता नहीं तुझे, कल मैं रानी बनने वाली हूँ. और तेरी यह जुर्रत कि तू मेरा रास्ता रोक रहा है?”







काफी रास्ता तय करने के बाद मान्यारा को एक खुली जगह दिखाई दी. वहां चांदनी रात में, बूढ़ी औरत एक बड़े पत्थर पर बैठी थी.

बूढ़ी औरत ने कहा. "मान्यारा, मैं तुम्हें एक सलाह देना चाहती हूँ. आगे जाकर तुम्हें दो रास्ते मिलेंगे. वहीं तुम्हें पेड़ों का एक झुरमुटा दिखाई देगा. तुम्हें देख कर पेड़ हसेंगे. पर तुम उनपर बिलकुल मत हँसना. बाद में तुम्हें एक आदमी मिलेगा जिसका सिर उसकी बगल में छिपा होगा. तुम उसके साथ सभ्यता और नम्रता से बात करना."

"तुम्हें मेरा नाम कैसे पता? एक भावी रानी को सलाह देने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई? बदसूरत, बूढ़ी औरत, मेरे सामने से हट!" मान्यारा ने उसे फटकारते हुए कहा. उसके बाद बिना पीछे देखे वो शहर की तरफ बढ़ी.

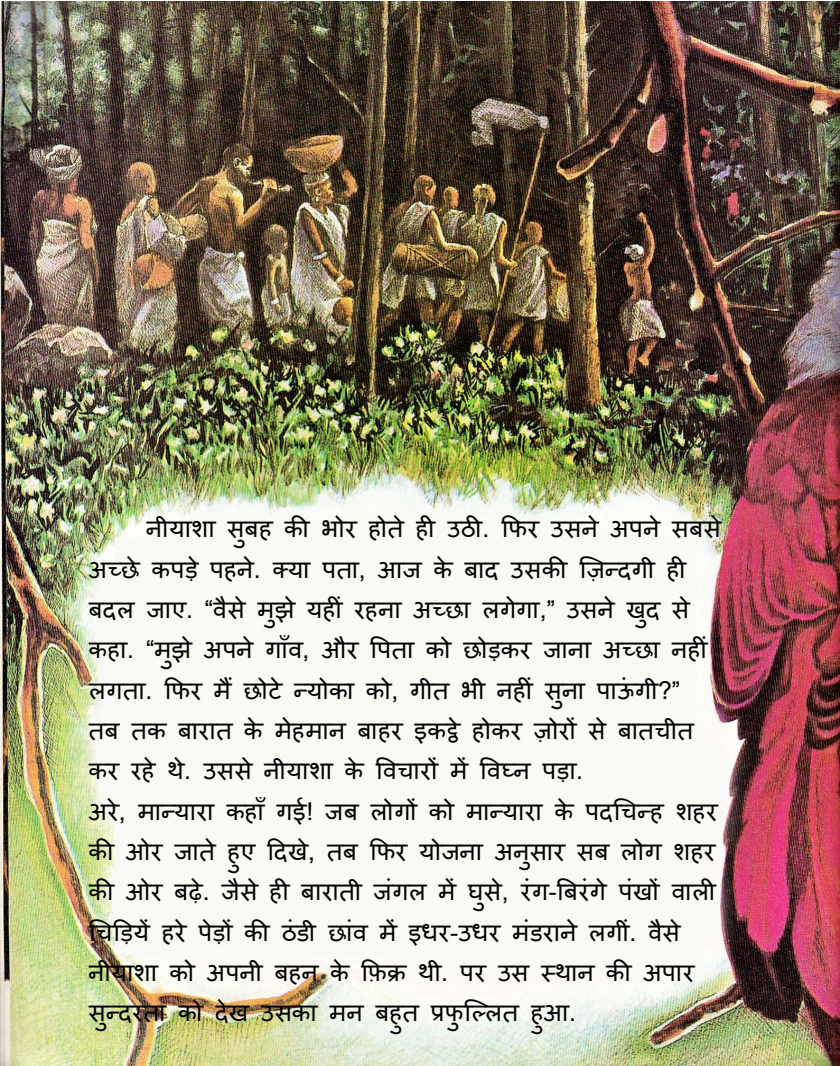


बूढ़ी औरत की भविष्यवाणी के अनुसार कुछ देर बाद मान्यारा को पेड़ों का एक झुरमुटा मिला. और कमाल की बात - वो सब उसपर हंस रहे थे.

“मुझे अपना संयम नहीं खोना चाहिए,” मान्यारा ने सोचा. “मैं इनसे डरूंगी नहीं.” फिर मान्यारा ने पेड़ों की तरफ देखा और ज़ोर से खिलखिलाकर हंसी. “पेड़ों देखो, मैं तुम पर हंस रही हूँ!” वो चिल्लाई. फिर वो वहां से चलती बनी.

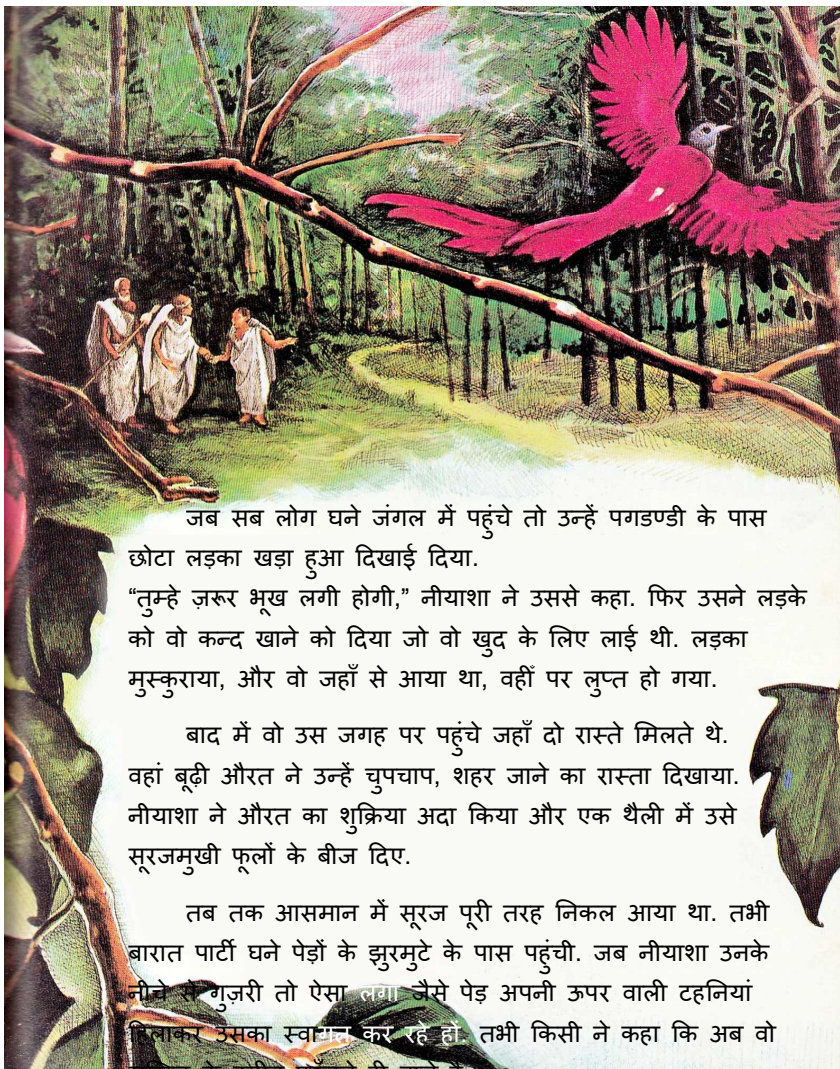
अभी पूरी तरह सुबह नहीं हुई थी. तभी मान्यारा को पानी के ज़ोर से बहने की आवाज़ आई. “आगे कोई नदी होगी,” उसने सोचा. “क्योंकि नदी के उस पार तो शहर बसा है.”

वहीं एक टीले पर उसे एक आदमी नज़र आया. आदमी का सिर उसकी बगल में दबा था. मान्यारा बिना कुछ कहे उसके सामने से निकली. “रानी केवल उसे ही स्वीकार करती है, जो उसे खुश करता है,” उसने खुद से कहा. “मैं जल्द ही - रानी बनूंगी, रानी बनूंगी,” वो शहर की ओर जाते हुए इस मंत्र का जाप करने लगी.



नीयाशा सुबह की भोर होते ही उठी. फिर उसने अपने सबसे अच्छे कपड़े पहने. क्या पता, आज के बाद उसकी ज़िन्दगी ही बदल जाए. “वैसे मुझे यहीं रहना अच्छा लगेगा,” उसने खुद से कहा. “मुझे अपने गाँव, और पिता को छोड़कर जाना अच्छा नहीं लगता. फिर मैं छोटे न्योका को, गीत भी नहीं सुना पाऊँगी?” तब तक बारात के मेहमान बाहर इकट्ठे होकर ज़ोरों से बातचीत कर रहे थे. उससे नीयाशा के विचारों में विघ्न पड़ा.

अरे, मान्यारा कहाँ गई! जब लोगों को मान्यारा के पदचिन्ह शहर की ओर जाते हुए दिखे, तब फिर योजना अनुसार सब लोग शहर की ओर बढ़े. जैसे ही बाराती जंगल में घुसे, रंग-बिरंगे पंखों वाली चिड़ियाँ हरे पेड़ों की ठंडी छांव में इधर-उधर मंडराने लगीं. वैसे नीयाशा को अपनी बहन के फ़िक्र थी. पर उस स्थान की अपार सुन्दरता को देख उसका मन बहुत प्रफुल्लित हुआ.



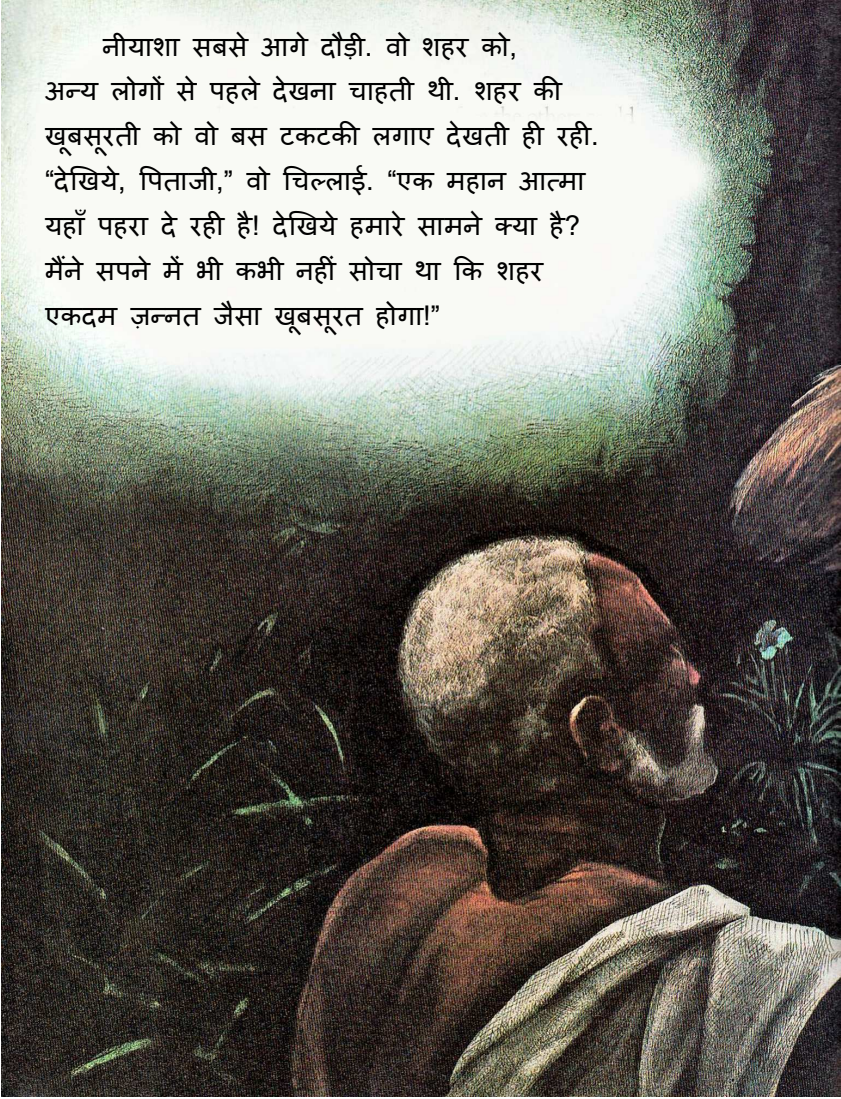
जब सब लोग घने जंगल में पहुंचे तो उन्हें पगडण्डी के पास छोटा लड़का खड़ा हुआ दिखाई दिया.

“तुम्हें जरूर भूख लगी होगी,” नीयाशा ने उससे कहा. फिर उसने लड़के को वो कन्द खाने को दिया जो वो खुद के लिए लाई थी. लड़का मुस्कुराया, और वो जहाँ से आया था, वहीं पर लुप्त हो गया.

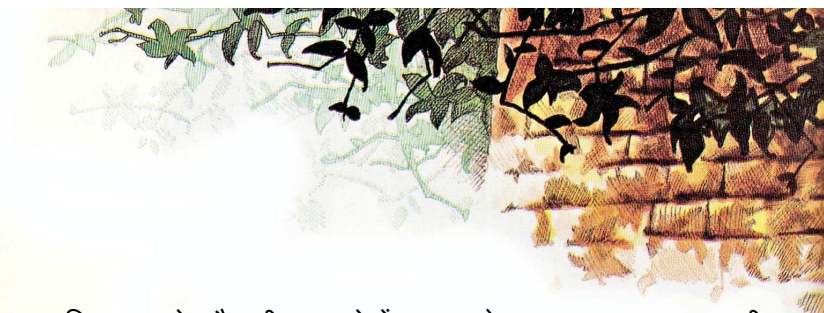
बाद में वो उस जगह पर पहुंचे जहाँ दो रास्ते मिलते थे. वहां बूढ़ी औरत ने उन्हें चुपचाप, शहर जाने का रास्ता दिखाया. नीयाशा ने औरत का शुक्रिया अदा किया और एक थैली में उसे सूरजमुखी फूलों के बीज दिए.

तब तक आसमान में सूरज पूरी तरह निकल आया था. तभी बारात पार्टी घने पेड़ों के झुरमुटे के पास पहुंची. जब नीयाशा उनके नीचे से गुज़री तो ऐसा लगा जैसे पेड़ अपनी ऊपर वाली टहनियां हिलाकर उसका स्वागत कर रहे हों. तभी किसी ने कहा कि अब वो मांजल के करीब पहुंचने ही वाले हैं.

नीयाशा सबसे आगे दौड़ी. वो शहर को,
अन्य लोगों से पहले देखना चाहती थी. शहर की
खूबसूरती को वो बस टकटकी लगाए देखती ही रही.
“देखिये, पिताजी,” वो चिल्लाई. “एक महान आत्मा
यहाँ पहरा दे रही है! देखिये हमारे सामने क्या है?
मैंने सपने में भी कभी नहीं सोचा था कि शहर
एकदम ज़न्नत जैसा खूबसूरत होगा!”





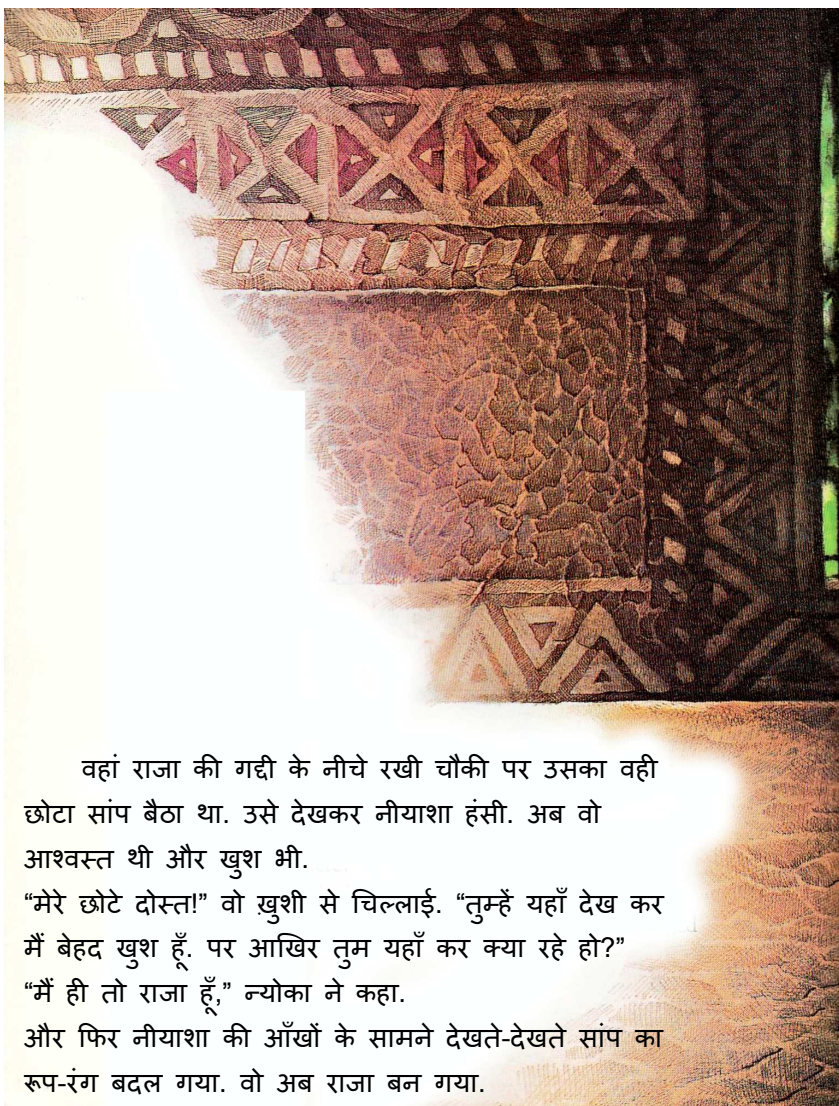


फिर मूफारो और नीयाशा दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़कर पहाड़ी से नीचे उतरे और उन्होंने नदी पार की और वो शहर के मुख्यद्वार के पास पहुंचे. शहर में कदम रखते ही उन्हें चिल्लाने की एक तेज़ आवाज़ आई और उन्होंने मान्यारा को एक कक्ष में से पलायन करते हुए देखा. नीयाशा को देखते ही मान्यारा उससे लिपट गयी और फूटफूट कर रोने लगी.

“बहन, तुम राजा के पास हरगिज़ मत जाना. कृपा कर, पिताजी आप उसे वहां न जाने दें!” यह कहकर वो ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी. “वहां एक भयंकर राक्षस है - पांच-फनों वाला सांप! उसे मेरी सभी गलतियों के बारे में पता था. मैंने उसके साथ बदसलूकी की थी, यह भी उसे पता था! अगर मैं वहां से नहीं भागती तो वो राक्षस निश्चित ही मुझे जिंदा निगल गया होता. बहन, तुम भूल कर भी वहां मत जाना.”

अपनी बहन को इस हालत में देखकर नीयाशा बहुत दुखी हुई. पर उसने मान्यारा को पिता की शरण में छोड़ा और फिर वो बहादुरी से कक्ष में घुसी और उसने वहां का दरवाज़ा खोला.



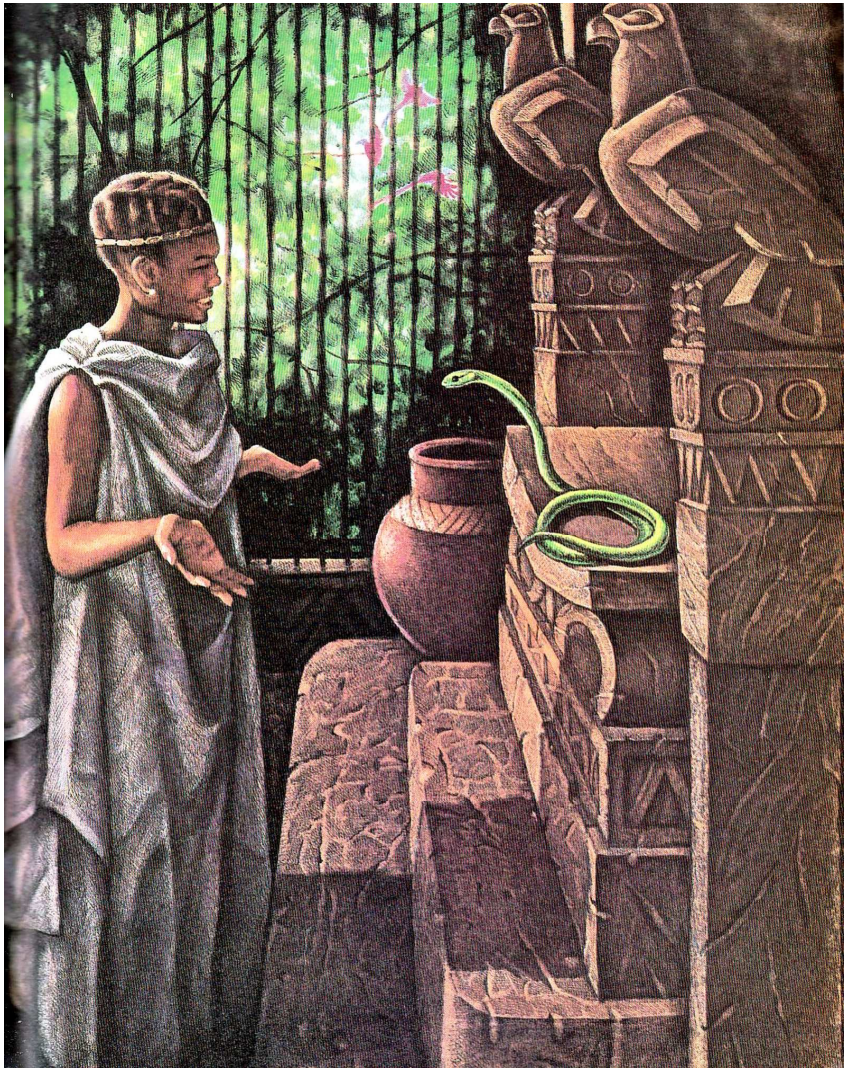


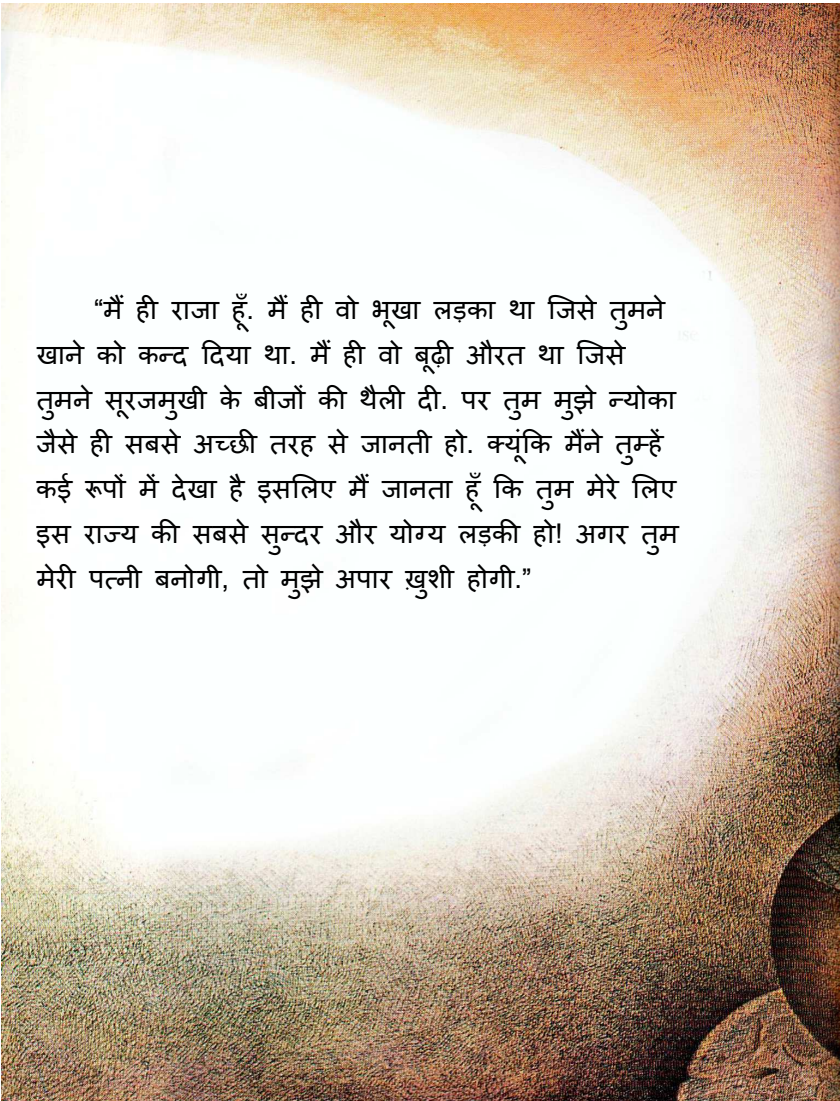
वहां राजा की गद्दी के नीचे रखी चौकी पर उसका वही छोटा सांप बैठा था. उसे देखकर नीयाशा हंसी. अब वो आश्वस्त थी और खुश भी.

“मेरे छोटे दोस्त!” वो खुशी से चिल्लाई. “तुम्हें यहाँ देख कर मैं बेहद खुश हूँ. पर आखिर तुम यहाँ कर क्या रहे हो?”

“मैं ही तो राजा हूँ,” न्योका ने कहा.

और फिर नीयाशा की आँखों के सामने देखते-देखते सांप का रूप-रंग बदल गया. वो अब राजा बन गया.





“मैं ही राजा हूँ. मैं ही वो भूखा लड़का था जिसे तुमने खाने को कन्द दिया था. मैं ही वो बूढ़ी औरत था जिसे तुमने सूरजमुखी के बीजों की थैली दी. पर तुम मुझे न्योका जैसे ही सबसे अच्छी तरह से जानती हो. क्योंकि मैंने तुम्हें कई रूपों में देखा है इसलिए मैं जानता हूँ कि तुम मेरे लिए इस राज्य की सबसे सुन्दर और योग्य लड़की हो! अगर तुम मेरी पत्नी बनोगी, तो मुझे अपार खुशी होगी.”





फिर क्या हुआ? होता क्या, नीयाशा शादी के लिए तैयार हो गयी. राजा की माँ और उसकी बहनें नीयाशा को अपने घर के अन्दर ले गयीं. उसके बाद शादी की ज़ोरदार तैयारियां शुरू हुईं. राज्य के सबसे कुशल बुनकरों ने विवाह के आलीशान कपड़े तैयार किए. शादी के लिए आसपास के सभी गाँवों के लोगों को आमंत्रित किया गया और उनके लिए एक शाही भोज रखा गया. नीयाशा अपने साथ जो कोदो लाई थी, उसने सबके लिए उसकी रोटियां बनायीं.

उस दिन मूफारो ने सबके सामने कहा कि वो उसकी ज़िन्दगी का सबसे खुश दिन था. क्योंकि उसकी दोनों सुन्दर और योग्य बेटियां - नीयाशा अब रानी बनी, और मान्यारा रानी के घर की दासी.

